"काव्य प्रयोजन"

'काव्य प्रयोजन' का अर्थ है— काव्य रचना का उद्देश्य। किस उद्देश्य से काव्य लिखा जाता है और किस उद्देश्य से पढ़ा जाता है? इसे दृष्टिगत रखकर काव्य प्रयोजन पर भारतीय काव्यशास्त्र में विस्तृत विचार-विमर्श किया गया है। काव्य प्रयोजन और काव्य प्रेरणा दोनों अलग है। काव्य प्रेरणा का अभिप्राय है—काव्य की रचना के लिए प्रेरित करने वाले तत्व, जबकि काव्य प्रयोजन का अभिप्राय है—काव्य रचना के अनन्तर (बाद में) प्राप्त होने वाले लाभ। 'नाट्य-शास्त्र' के रचयिता आचार्य भरत मुनि ने 'नाटक' के प्रयोजनों पर विचार करते हुए लिखा है—

"दुखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥"

अर्थात् नाटक का उद्देश्य दुःखार्त व्यक्ति को सुख और शान्ति की प्राप्ति कराना है। नाटक काव्य का ही एक रूप है। अतः आचार्य भरतमुनि द्वारा निर्दिष्ट प्रयोजन को 'काव्य प्रयोजन' माना जा सकता है।

आचार्य भामह के अनुसार—

"धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिञ्च साधुकाव्य निबन्धनम्॥"

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कलाओं में निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति और प्रीति अर्थात आनन्द की भी प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

आचार्य भामह के काव्य प्रयोजन में कवि और पाठक दोनों के काव्य प्रयोजनों की चर्चा है।

आचार्य वामन के अनुसार, "काव्यं सदृदृष्टा दृष्टार्थ प्रीति-कीर्ति-हेतुत्वात्।" आचार्य वामन के मतानुसार काव्य के दो प्रमुख प्रयोजन हैं- (i) प्रीति अथवा आनन्द साधना, जो काव्य का दृष्ट प्रयोजन है। (ii) कीर्ति अथवा यश प्राप्ति, जो काव्य का अदृष्ट प्रयोजन है।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक ने अपने ग्रन्थ 'वक्रोक्ति जीवित' में काव्य प्रयोजनों का उल्लेख करते हुए लिखा है—

"धर्मादि साधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः॥"

अर्थात् काव्य धर्मादि सिद्धि का साधन होने के साथ-साथ आह्लाद उत्पन्न करने वाला होता है। इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए वे आगे लिखते हैं—

"चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्।
काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते॥"

अर्थात् काव्य रूपी अमृत सहृदयों के अन्तःकरण में चतुर्वर्ग फलास्वाद से भी बढ़कर आनन्द उत्पन्न करने वाला होता है। आचार्य कुन्तक ने व्यवहार ज्ञान, आनन्दोपलब्धि एवं पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ काम, मोक्ष) की सिद्धि को काव्य प्रयोजन माना है।

आचार्य मम्मट के अनुसार—

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे॥"

अर्थात् काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए,

Scanned with CamScanner

व्यवहार ज्ञान के लिए, अमंगल शान्ति के लिए, अलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति के लिए प्रयोजनीय होते हैं। आचार्य मम्मट ने काव्य के छः प्रयोजन बताए हैं— (i) यश प्राप्ति (ii) अर्थ प्राप्ति (iii) लोक व्यवहार ज्ञान (iv) अनिष्ट का निवारण या लोक-मंगल (v) आत्मशान्ति या आनन्दोपलब्धि तथा (vi) कान्तासम्मित उपदेश। इनमें से यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, आत्मशान्ति कवि के काव्य प्रयोजन हैं और लोकव्यवहार ज्ञान, अमंगल की शान्ति तथा कान्ता सम्मित उपदेश सहृदय पाठक के काव्य प्रयोजन हैं। गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार,

"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा।"

"कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥"

तुलसीदास काव्य के दो प्रयोजन मानते हैं— (i) स्वान्तः सुख और (ii) लोकमंगल

भिखारीदास के अनुसार —

"एक लहैं, तप पुंजन के फल, ज्यों तुलसी अरु सूर गुसाईं।
एक लहैं बहु सम्पति केशव, भूषण ज्यों बर बीर बड़ाई॥
एकन्ह को जस ही सों प्रयोजन, है रसखानि रहीम की नाई।
दास कवित्तन्ह की चरचा बुद्धिवन्तन को सुख दै सब ठाईं॥"

भिखारीदास ने यश प्राप्ति, फल प्राप्ति, आनन्द प्राप्ति आदि को काव्य प्रयोजन के रूप में स्वीकार किया है। मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार —

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥"

"मानते हैं जो कला को बस कला के अर्थ ही।
स्वार्थिनी करते कला को व्यर्थ ही॥"

यहाँ पर मैथिलीशरण गुप्त जी ने काव्य का प्रयोजन केवल मनोरंजन या कला,कला के लिए नहीं मानकर बल्कि उपदेश और लोकहित को काव्य प्रयोजन माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "कविता का अन्तिम लक्ष्य जगत में मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उसके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।--- ---काव्य का लक्ष्य है जगत और जीवन के मार्मिक पक्ष को गोचर रूप में लाकर सामने रखना।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य का लक्ष्य मानव हित और लोकमंगल मानते हुए लिखा है, "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता, परमुखापेक्षिता से न बचा सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न कर सके, जो उसे परदुःखकातर और सम्वेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"

क्या सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का मानना है कि, "साहित्य का उद्देश्य हमारा मनोरंजन करना नहीं है। यह काम तो भाटों, मदारियों, विदूषकों और मसखरों का है। साहित्यकार का पद इससे बहुत ऊँचा है। वह हमारे विवेक को जाग्रत करता है, हमारी आत्मा को तेजोदीप्त बनाता है।"

उपर्युक्त विद्वानों के काव्य प्रयोजन सम्बन्धी मतों का विवेचन के पश्चात हम निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि आचार्य मम्मट द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन उचित,

Scanned with CamScanner

तर्कसंगत, व्यापक और व्यावहारिक है। रसानुभूति काव्य को ब्रह्मानंद सहोदर बनाती है। अतः यह (रसानुभूति) काव्य का सकल प्रयोजन है। वस्तुतः यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, आत्मशान्ति, लोक व्यवहार का ज्ञान, अमंगल की शान्ति और कान्तासम्मित उपदेश ही सर्वश्रेष्ठ काव्य प्रयोजन है।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner